विगत से वर्तमान तक हिन्दी विकास के स्वर्णिम क्षितिज

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ,उ.प्र.

शोध सारांश

अनेक भाषा वैज्ञानिकों का मानना है कि आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का विकास प्राचीन भारतीय प्राकृत भाषाओं से ही हुआ है। ज्ञातव्य है कि भारतवर्ष में प्राकृत भाषा बहुत प्राचीन काल से कथित भाषा रूप में प्रचलित थी। देश भेद से उस प्राकृत में भी थोड़ा बहुत प्रभेद था। परन्तु यह प्राकृत जब लिखित रूप में व्यवहृत होने लगी तब आवश्यकतानुसार उसके संस्कार का भी प्रयोजन हुआ। वही सुसंस्कृत प्राकृत भाषा पालि, मागधी अथवा इसके बाद आगे चलकर अपभ्रंश के माध्यम से आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का विकास हुआ है।

बीज शब्द– *भाषा वैज्ञानिक,भाषा विज्ञान,विगत,वर्तमान,हिन्दी का विकास*

हिन्दी की विस्तार यात्रा की कहानी काफी पुरानी है। विश्व की किसी भाषा की आन्तरिक शक्तियों और सांस्कृतिक परिस्थितियाँ उसके विस्तार की संभावनाओं को निश्चित करती हैं। आंतरिक शक्तियों में किसी भाषा की संरचनात्मक सरलता, उसके वंश संस्कार और उसकी व्यवहारोपयोगिता जैसे तत्व आते हैं। वाह्य परिस्थितियों में भौगोलिक और सामाजिक तत्व परिगणित किए जाते हैं, हिन्दी की विभिन्न साहित्यिक इकाइयाँ समय–समय पर बनती रही हैं और अपनी क्षेत्रीय सीमाओं का अतिक्रमण करके अपना क्षितिज भी करती रहती हैं।[1]

पूरी दुनिया में आज कुल लगभग तीन हजार भाषाएँ बोली जाती हैं जिनका समानताओं–असमानताओं की दृष्टि से विचार करें तो यह प्रायः तेरह परिवारों में रखी गयी हैं। इनमें बहुत सी भाषाएँ पारिवारिक रूप से आपस में सम्बद्ध हैं। अर्थात वे मूलतः किसी एक भाषा से ही निकली हैं। प्रयोग की दृष्टि से ध्वनि, व्याकरण तथा शब्द समूह का तुलनात्मक अध्ययन–विश्लेषण करके तथा भौगोलिक निकटता का विस्तार करके विद्धानों ने भाषाओं के पारिवारिक सम्बन्धों का पता लगाया है।

हिन्दुस्तान में सब मिलकर 147 भाषाएँ या बोलियाँ बोली जाती हैं। उनमें से हिन्दी वह भाषा है जिसका सम्बन्ध एक ऐसी प्राचीन भाषा से है जिसे हमारे और यूरोप वालों के पूर्वज किसी समय बोलते थे अर्थात एक समय ऐसा था जब दोनों के पूर्वज एक ही साथ, या पास–पास रहते थे और एक ही भाषा बोलते थे।[2] शब्दार्थ की दृष्टि से बात की जाए तो हिन्द या भारत में बोली जाने वाली भाषा हिन्दी कही जाती है। हिन्दी के प्राचीन नामों में हिंदुई या हिंदवी का भी यही अर्थ है। जब भारत में मुसलमानों का प्रवेश हुआ तो उन्होंने मध्य देशों को 'हिंदुई' कहा जो बाद में व श्रुति के साथ हिंदुवी भी बन गयी। मोटे तौर पर दिल्ली के आस–पास की बोली देहलवी या उसके निकटवर्ती क्षेत्र की बोलियों पर

आधारित यह हिन्दू–मुसलमानों की समान भाषा रही जिसके अन्तर्गत प्राचीन–नवीन सभी रूप हिन्दी, हिन्दुस्तानी, दक्खिनी, रेख्ता, उर्दू आदि सभी समाहित हो जाते हैं। स्पष्ट शब्दों में अमीर खुसरों ने घोषित किया था कि, मैं हिन्दुस्तानी तुर्क हूँ और हिंदवी में उत्तर देता हूँ। मेरे पास मिश्र की शक्कर नहीं है जिससे मैं अरबी में बात कर सकूँ।

तुर्क–इ–हिंदुस्तानिम मनदर हिंदवी गोएम जवाब।

शक्कर–इ–मिस्त्री न दरम क ज अरब गोएम खुरवन।[3]

भाषा विज्ञान में परिवार शब्द का प्रयोग बहुत समय से होता आया है । भाषा परिवार उन समुदायों का जिनमें ध्वनि तंत्र, शब्द तंत्र, विन्यास तंत्र की अनेक समानताएँ हैं, इस समुदाय का निर्माण एक भाषा स्रोत से नहीं बल्कि अनेक भाषा स्रोतों से होता हैः भाषा–परिवार वंशवृक्ष की जड़ों से बंधी हुयी कोई जड़ इकाई नहीं है, वह सामाजिक विकास के साथ गतिशील, स्वयं विकासमान और परिवर्तनशील इकाई है। किसी आदि भाषाओं की शाखाओं–प्रशाखाओं का समूह कोई भी भाषा परिवार नहीं होता है। कोई भाषा परिवार किसी खास नस्ल के लोगों की भाषाओं का समूह न पहले कभी रहा है, न आज है। यहाँ परिवार शब्द ही भ्रान्तिपूर्ण है। जो भाषाएँ आपस में मिलती जुलती दिखाई देती हैं, उन्हें परिवार की संज्ञा यह सोचकर दी गयी थी कि इनका निर्माण मानव–परिवार के समान है, आदि मातामही भाषा से लेकर आधुनिक नातिन–पनातिन भाषाओं तक पूरे वंशवृक्ष का नक्शा बनाकर दिखाया जा सकता है। इस तरह की कल्पनाएँ निराधार हैं।[4]

इस समय पूरे देश में लगभग तेरह भाषा परिवार देखने को मिलते हैं। जैसे द्रविड़ परिवार, चीनी परिवार, साकी परिवार, भारोपीय परिवार। परिवार बोलने वालों की संख्या तथा क्षेत्रफल दोनों दृष्टियों से संसार का सबसे बड़ा परिवार है। अन्य भाषा परिवारों की तुलना में भारोपीय परिवार के सम्बन्ध में अध्ययन–विश्लेषण अधिक हुआ है। यह परिवार पश्चिमी यूरोप से लेकर प्रायः यूरोप, ईरान, पाकिस्तान, भारत, बांग्लादेश, श्रीलंका, अमेरिका, अफ्रीका तथा आस्ट्रेलिया के अनेकों भागों में फैला है। यह परिवार साहित्य, ज्ञान–विज्ञान और कला तथा भौतिक प्रगति आदि में भी आगे है। इसका भारोपीय नाम इस परिवार के मुख्य भौगोलिक क्षेत्र के एक ओर भारत और दूसरी ओर यूरोप के होने के कारण पड़ा है। भारत+यूरोप= भारोपीय।[5]

भारोपीय परिवार की प्रमुख भाषाएँ संस्कृत, ग्रीक, लैटिन, अवेस्ता, अंग्रेजी, जर्मन, रूसी, फ्रांसीसी, फारसी, हिन्दी, मराठी, बंगाली आदि हैं। भारोपीय परिवार मूलतः केन्तुम तथा सतम दो शाखाओं में विभक्त हैं। यह विभाजन एक ही ध्वनि के दोनों शाखाओं में क और स रूप में मिलने पर आधारित है। प्रथम शाखा केन्तुम वर्ग में ग्रीक, लैटिन, जर्मन, अंग्रेजी आदि आती हैं तो द्वितीय शाखा सतम में रूसी, आर्मिनियन तथा भारत, ईरानी आदि आती हैं। कुछ समय पश्चात भारत–ईरानी की भारतीय दरद और ईरानी ये तीन भाषाएँ हो गईं। ईरानी शाखा से फारसी, ताजिक, पश्तो आदि भाषाओं का विकास हुआ है तो दरद से कश्मीरी, शिणा आदि का भारतीय में क्रमशः प्राचीन भाषा संस्कृत, मध्य युगीन शाखाएँ पालि, प्राकृत, अप्रभ्रंश और आधुनिक भाषाएँ हिन्दी, बंगाली, मराठी आदि हैं।

भारतीय परिवार की ही एक प्रमुख शाखा भारतीय आर्य शाखा लगभग 1500 ई0पू0 में बाहर (शायद मध्य यूरोप) से आकर भारत में प्रविष्ट हुई। इस आर्य भाषा समुदाय में मगध, कोसल, कुरू आदि उन गण–समाजों की भाषाएँ हैं जिनके नाम विख्यात हैं। आर्यों ने जब 1500 ई0पू0 के लगभग भारत में प्रवेश किया तो वे वैदिक संस्कृत बोलते थे। स्थानीय प्रभावों के कारण जल्दी वैदिक संस्कृत काल में उस भाषा की तीन

स्थानीय बोलियाँ विकसित हो गईं। पश्चिमोत्तरी, मध्यवर्ती, पूर्वी आगे चलकर पालि काल में एक और स्थानीय बोली दक्षिणी का विकास हो गया। इस प्रकार स्थानीय बोलियों की संख्या चार हो गई। प्राकृत काल में मुख्य स्थानीय बोलियाँ धीरे–धीरे छः–सात हो गईं। क्रमशः जिनके नाम इस प्रकार हैं:–ब्राचड, केकय, टक्क, शोरसैनी, महाराष्ट्री, अर्धमागधी, मागधी। इन्हीं से अपभ्रंश काल में सात अप्रभ्रंशीय स्थानीय बोलियों का विकास हुआ जिन्हें प्राकृतों के नाम के आधार पर उन्हीं नामों से पुकारा जा सकता है: ब्राचड, केकय, टबक, शोरसैनी, महाराष्ट्री, अर्धमागधी, मागधी। इन्हीं अप्रभ्रंशों से आधुनिक भारतीय भाषाएँ उदभूत हुई हैं। ब्राचड–सिंधी, कैकेय–लहँदा, टक्क–पंजाबी, महाराष्ट्री–मराठी, शौरसेनी–गुजराती, राजस्थानी पश्चिमी हिन्दी, पहाड़ी, अर्धमागधी–पूर्वी हिन्दी, मागधी–बिहारी, बांग्ला, असमी, उड़िया।[6] हिन्दी की जो पाँच उपभाषाएँ हैं–दरअसल में पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, पहाड़ी, बिहारी का सामूहिक नाम है। इन उपभाषाओं का उद्‌भव सन् एक हजार के आस–पास माना जाता है जिनका नाम शौर सैनी, अर्धमागधी तथा मागधी अपभ्रंश है।

यहाँ एक बात संकेत करने की है कि यों तो हिन्दी के कुछ रूप पालि में मिलने लगते हैं, प्राकृत में उनकी संख्या और बढ़ जाती है तथा अपभ्रंश में उनमें और भी वृद्धि हो गई है किन्तु सब मिलाकर इनका प्रतिशत इतना कम है कि 1000 ई0 के पूर्व हिन्दी का उदभव नहीं माना जा सकता। साहित्य के इतिहास में कुछ लोगों ने हिन्दी का प्रारम्भ और भी बाद में माना है किन्तु वास्तविकता यह है कि साहित्य में प्रयोग के आधार पर वे निष्कर्ष आधारित हैं और साहित्य में भाषा का प्रयोग जन्म के साथ ही नहीं हो जाता। जब किसी भाषा में जनमने के बाद कुछ प्रौढ़ता आ जाती है, उसका रूप कुछ निखर आता है तथा बहुस्वीकृत हो जाता है, तभी साहित्यकार उसे अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाता है। इस तरह से देखा जाए तो यदि 1150 ई0 के आस–पास से भी हिन्दी साहित्य मिले तो भी उस भाषा का आरम्भ 1000 ई0 आस–पास से भी हिन्दी साहित्य मिले तो भी उस भाषा का आरम्भ 1000 ई0 के आस–पास ही मानना पड़ेगा। उसके पूर्व या बाद में नहीं।[7] इस तरह यह कहा जा सकता है कि हिन्दी भाषा अपने जन्म सन् एक हजार ई0 से लेकर विकसित होते होते अब इक्कीसवीं सदी के प्रथम ढेड़ दशक में लगभग ग्यारह सौ वर्षों की हो गई है।

अपने प्रसिद्ध इतिहास ग्रन्थ द मार्डन वर्नाक्यूलर लिट्रेचर आफ हिन्दुस्तान (1889) की भूमिका में सर जार्ज ग्रियर्सन ने हिन्दी भाषा के उदभव पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि मराठा शक्ति के पतन और विद्रोह समापन के साथ उदित हुए उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध से ही भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण और नवीनतम युग का शुभारंभ होता है। यही हिन्दी के उदभव का काल था जिसकी खोज अंग्रेजों ने की थी और गिलक्राइस्ट की प्रेरणा से सन्1803ई0में प्रेमसागर के रचयिता लल्लू जी लाल ने साहित्यिक गद्य लेखन की वाहिका के रूप में जिसका सर्वप्रथम प्रयोग किया था।[8]

यहाँ यह बताना आवश्यक है कि इस स्थान पर ग्रियर्सन ने हिन्दी भाषा का उदभव उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध से माना है। लेकिन हिन्दी भाषा के अनेक विद्वान ग्रियर्सन के उपर्युक्त मत का खण्डन करते हुए उनके हिन्दी भाषा के उदभव और विकास क्रम को प्राचीन और पारंपरिक बताते हैं। इन विद्वानों के नाम–सुनीति कुमार चाटुर्ज्या, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, कामता प्रसाद गुरू, कैलाग, बीम्स, हार्नली हैं।

हिन्दी साहित्य लेखन की परम्परा में हिन्दी भाषा के उदभव के आरम्भिक मूल स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक डॉ0 सुनीति कुमार चाटुर्ज्या के मतानुसार बारहवीं–तेरहवीं शती की तुर्की विजय के पश्चात

(पूर्वी पंजाब से बंगाल तक) उत्तर भारत में बोली जाने वाली सभी बोलियों तथा भाषाओं का प्राचीनतम एवं सरलतम नाम हिन्दी ही है।[9]

डॉ0 सुनीति कुमार का मानना है कि तुर्कों तथा अन्य मुसलमान विदेशियों द्वारा उत्तरी भारत के मुसलामानों द्वारा दक्षिण भारत की विजय को लेकर सन् एक हजार ई0 के पश्चात जब एक नए युग का सूत्रपात हुआ, तब भारतीय भाषाओं को भी भारतीय विचारों तथा भारतीय संस्कृति की नई दिशा को व्यक्त करने के लिए एक बार नये सिरे से कटिबद्ध होना पड़ा।[10]

भाषा के इतिहास में यह वह समय था जब प्राकृतों का युग बीत चुका था। प्रादेशिक अपभ्रंशों की राह से होती हुई प्राकृतें, परिवर्तित होकर आधुनिक भारतीय भाषाएँ बन गयी थीं। इन्हीं आधुनिक भारतीय भाषाओं में से एक हिन्दी भाषा है। जिसके प्राथमिक रूप के दर्शन राजस्थान की डिंगल–पिंगल उपभाषा तथा पृथ्वीराज रासों आदि कई अन्य तत्कालीन ग्रंथों में होता है। प्रमुख भाषा वैज्ञानिक डॉ0 उदय नारायण तिवारी के विचार से भी उक्त अभिमत की पुष्टि होती है। आपका मानना है कि आचार्य हेमचन्द्र के पश्चात तेरहवीं शती के आरम्भ में आधुनिक भारतीय भाषाओं के अभ्युदय के समय पन्द्रहवीं शती के आरम्भ में आधुनिक भारतीय भाषाओं के अभ्युदय के समय पन्द्रहवीं शती के पूर्व तक का काल संक्रान्ति का काल था। जिसमें भारतीय आर्य भाषा धीरे–धीरे अपभ्रंश की स्थिति को छोड़कर आधुनिककाल की विशेषताओं से युक्त होती जा रही थीं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल भी संवत 1050 से हिन्दी साहित्य के आदिकाल का उदय मानते हैं। रासो काव्यों की भाषाओं के आधार पर वे पृथ्वीराज रासों को हिन्दी का आदि ग्रंथ मानते हैं। उनका मानना है कि उस समय की प्राप्त साहित्य सामग्री की भाषा अपभ्रंश अर्थात प्राकृताभास (प्राकृत की रूढ़ियों से बहुत कुछ बद्ध) हिन्दी है।[11] इस सन्दर्भ में यह कहा जाए कि यदि भाषा का विकास साहित्य से पूर्व होता है तो संवत 1050 से पूर्व ही हिन्दी भाषा का उदभव माना जा सकता है।

इस तरह से स्पष्ट है कि हिन्दी भाषा अपने उदभव काल से ही जनभाषा के रूप में आम जनमानस में फलती–फूलती हुई अपने वर्तमान स्वरूप में हिन्दी भाषी प्रदेशों के अलावा आज हिन्दी का विस्तार गैर हिन्दी भाषी प्रदेशों और विश्व के अनेक देशों में हो रहा है। देश को स्वतन्त्रता मिलने के पश्चात भारत सरकार ने हाँलाकि आश्वासन दिया था कि देश की आजादी के 15 वर्ष बाद इसे राष्ट्रभाषा का दर्जा दे दिया जाएगा लेकिन देश की आन्तरिक राजनीति के कारण इसे अपने ही देश में तिरस्कृत होना पड़ रहा है। लेकिन सुखद यह है कि वैश्विक परिदृश्य में विश्व हिन्दी सम्मेलनों एवं विदेशी विश्वविद्यालयों में इसके पठन–पाठन से लोगों को हिन्दी के प्रति रूचि बढ़ने लगी है। और इसमें कोई दो राय नहीं कि आज हिन्दी अपनी विकास यात्रा के स्वर्णिम क्षितिजों को छूने में कामयाब हो रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मधुकर गोपीकृष्ण राठी एवं शर्मा गोवर्धन,राष्ट्रभाषा हिन्दी–रूपा बुक्स प्रा. लि. एस–12 शापिंक काम्पलेक्स तिलक नगर जयपुर–302004, प्र.सं.–1995,पृ01
2. द्विवेदी महावीर प्रसाद,हिन्दी भाषा–,वाणी प्रकाशन–21 ए दरियागंज, नई दिल्ली 110002,संस्करण–1995,पृ016–17
3. भाटिया कैलाश चन्द्र,भारतीय भाषाएँ–प्रभात प्रकाशन, 205, चावड़ी बाजार, दिल्ली,पृ0–121
4. शर्मा राम विलास,ऐतिहासिक भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा– राजकमल प्रा.लि. 1 बी

नेता जी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002, प्र. सं.–2001,पृ076

5. तिवारी डॉ0 भोलानाथ,हिन्दी भाषा का अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ–पांडुलिपि प्रकाशन 77/1 ईस्ट आज़ाद नगर, दिल्ली 110051, प्र.स. 1998,पृ09
6. तिवारी डॉ0 भोलानाथ,राजभाषा हिन्दी–चावड़ी बाजार दिल्ली 110006, प्रथम संस्करण–1952,पृ09
7. तिवारी डॉ0 भोलानाथ हिन्दी भाषा का अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ– पांडुलिपि प्रकाशन 77/1 ईस्ट आज़ाद नगर, दिल्ली 110051, प्र.स. 1998,पृ010
8. प्रसाद डॉ0 विनोद कुमार,भाषा और प्रौद्योगिकी–वाणी प्रकाशन–21 ए, दरियागंज ,नई दिल्ली–110002, प्रथम संस्करण–1999,पृ030
9. चाटुर्ज्या सुनीति कुमार,भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी–प्राक्कथन,राजकमल प्रकाशन,1 बी नेताजी सुभाष चन्द्र मार्ग, नई दिल्ली–110002, पांचवा संस्करण–1989,पृ0153
10. चाटुर्ज्या सुनीति कुमार,भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी–राजकमल प्रकाशन,1 बी नेताजी सुभाष चन्द्र मार्ग, नई दिल्ली–110002, पांचवा संस्करण–1989,पृ0115
11. शुक्ल आचार्य रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास–लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद,2019,पृ08